व्याख्या

खंड (क)

उत्तर-1. (क) जब पास में सब कुछ हो और समस्या का समाधन तथा प्रश्न का उत्तर न मिले तब आदमी की बेचैनी बढ़ जाती है। (1+1)

(ख) जीवन में दो चीजें बहुत महत्त्वपूर्ण होती हैं– पहला किसी के द्वारा समझा जाना और दूसरा किसी को समझ पाना। हमारे जीवन का सारा खेल इसी पर टिका है कि हम स्वयं को कितना अभिव्यक्त कर पा रहे हैं और हमारी उस अभिव्यक्ति को समाज किस हद तक स्वीकार कर रहा है। (1+1)

(ग) जब कोई हमें समझता या सुनता है तब हमारा तंत्रिका तंत्र (नर्वस सिस्टम) सक्रिय हो उठता है। (1)

(घ) तनाव रहित होकर हम राहत की स्थिति में पहुँच जाते हैं और हमारे भीतर एक तरह की निश्चिंतता का भाव पैदा हो जाता है, जबकि न समझे जाने की स्थिति हमारे तंत्रिका तंत्र पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। (1+1)

(ङ) समाज में नकारात्मकता से कई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। इससे बचने के लिए हमें खुद की प्रशंसा सुनने के साथ दूसरों की प्रशंसा भी करनी चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण का यही गुण था कि उन्हें शत्रु में भी अच्छाई नजर आती थी तो उसकी प्रशंसा करने से नहीं चूकते थे। जीवन को खुशहाल बनाने के लिए जरूरी है कि हम एक-दूसरे की भावनाओं और संवेदनाओं को महत्व दें। (1+1)

उत्तर-2. (क) कवि अपनी सीमाओं का ध्यान रखना चाहता है और वह अपनी दुर्बलता पर अभिमान करना चाहता है। (1)

(ख) अपने सुख-दुख को पहचानने का कवि का अनोखा तरीका है। कवि पहले से ही यह समझ लेना चाहता है कि उसे जीवन में कितना सुख मिलने वाला है और कितने दुखों के लिए उसे रोना पड़ सकता है। (1+1)

(ग) कवि अपने सपनों को पूरा करने का विश्वास रखता है। उसका कहना है कि वह ऐसा कोई सपना ना देखे, जिसे वह पूरा न कर सके। मंजिल पाने की कोशिश में लगन में कोई कमी नहीं रहनी चाहिए। तभी हम अपने लक्ष्य (स्वप्न) को प्राप्त कर सकेंगे। (½+ ½+½+½)

(घ) उक्त कविता में अपनी योग्यताओं को पहचानकर उसके अनुरूप स्वप्न देखना चाहता है। उसे अपने ऊपर यह विश्वास है कि पूरी लगन से वह स्वप्न पूरे करेगा। इसके लिए वह प्रभु से प्रार्थना करता है। (½+½)

खंड (ख)

उत्तर-3. वर्णों के मेल से बने सार्थक समूह को शब्द कहते हैं। शब्द स्वतंत्र होते हैं तथा शब्दकोश में उपलब्ध होते हैं। जब इन सार्थक शब्दों का वाक्यों में प्रयोग किया जाता है तथा वे शब्द वाक्य में किसी

व्याकरणिक इकाई की भूमिका निभाते हैं तो पद कहलाते हैं। इस प्रकार स्वतंत्र शब्द वाक्य पर आश्रित होकर पद बन जाते हैं। जैसे– कमल, ताल, खिलना आदि स्वतंत्र शब्द हैं परंतु ताल में कमल खिले हैं वाक्य में सभी शब्द पद बन चुके हैं। (1+1)

उत्तर-4. (क) वह अपना काम करके घर चला गया। (1)

(ख) जिस किसान ने मेहनत की उसने अच्छी उपज की। (1)

(ग) लोगों ने टोलियाँ बनाईं और मैदान में घूमने लगे। (1)

उत्तर-5. (अ) (क)मार्ग के लिए व्यय – संप्रदान तत्पुरुष (1)

(ख)चक्र को धारण किया है जिसने (विष्णु)– बहुव्रीहि (1)

(आ) (क)यथोचित – अव्ययीभाव (1)

(ख)भवसागर – कर्मधारय (1)

उत्तर-6. (क) आप कब जाएँगे? (1)

(ख) माताजी ने खाना बना लिया है। (1)

(ग) ईद के दिन अनेक लोगों ने नमाज पढ़ी। (1)

उत्तर-7. (क) बहन की शादी के अवसर पर सीमा एक महीने तक मायके में डेरा डाले रही। (1)

(ख) छात्रवृत्ति मिलने की खबर सुनकर शैलेश सातवें आसमान पर पहुँच गया। (1)

(ग) माँ के स्वर्गवास के पश्चात् परिवारवालों ने रमेश को दूध की मक्खी के समान निकाल फेंका। (1)

खंड (ग)

उत्तर-8. (क) बड़े भाई साहब का यह मानना था कि बड़ों का कर्तव्य होता है कि वे छोटों का ध्यान रखें। बड़ों का अनुभव हमेशा अधिक होता है। साथ ही इसके लिए वे छोटे भाई को माता-पिता का उदाहरण भी देते हैं। बड़ों को जीवन का चौतरफा अनुभव होता है। इसलिए पढ़ाई में छोटा भाई कितना ही आगे हो अनुभव में कम ही रहेगा। इस कारण पढ़ाई में पीछे होने के बावजूद बड़े भाई छोटे भाई को सिखाते-समझाते रहते थे। (½+½+½+½)

(ख) कर्नल कालिंज ने वज़ीर अली को पद से हटाकर बनारस पहुँचा दिया था। तब कुछ महीने बाद कलकत्ता में कंपनी के गवर्नर जनरल ने उसे बुलाया। वज़ीर ने बनारस में कंपनी के वकील से गवर्नर जनरल की शिकायत की तो वकील ने उसे ही बुरा-भला सुना दिया। वज़ीर अली के दिल में अंग्रेज़ों के लिए नफ़रत कूट-कूटकर भरी थी। उसने खंजर से वकील का कत्ल कर दिया। (½+½)

(ग) आदर्शवादी लोग शाश्वत मूल्यों को मानकर चलते हैं। वे अपना विकास करने के साथ-साथ दूसरों को ऊपर लेकर चलते हैं। इस प्रकार इनका काम पूरे समाज को ऊपर उठाना है। दूसरी ओर व्यवहारवादी लोगों ने सदा समाज को गिराया है। ये हमेशा सजग रहते हैं तथा लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही

कदम उठाते हैं। ऐसे लोग जीवन में सफल होते हैं और आगे भी जाते हैं। पर व्यवहारवादी लोग समाज को ऊँचाईयों की ओर नहीं ले जा पाते। (½+½+½+½)

उत्तर-9. 'तताँरा-वामीरो कथा' अंडमान निकोबार द्वीप समूह के एक छोटे से द्वीप पर केंद्रित कथा है, जहाँ विद्वेष गहरी जड़ें जमा चुका था। उस विद्वेष को जड़ से उखाड़ने के लिए एक युगल को आत्मबलिदान देना पड़ा था। उसी युगल के बलिदान के संदर्भ में प्रश्न के कथन को स्पष्ट किया जा सकता है। तताँरा और वामीरो दो भिन्न गाँवों के रहने वाले थे। वामीरो लपाती की थी और तताँरा पासा का। रीति अनुसार उनका संबंध संभव नहीं था। लोगों ने दोनों को समझाने बुझाने का प्रयास किया किंतु दोनों अडिग रहे। दोनों के लिए पारंपरिक रूढ़ियाँ तथा बंधन का कोई अर्थ नहीं था। सच्चा प्रेम पूर्ण समर्पण की माँग करता है तथा आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों की बाजी तक लगा देता है। इस प्रकार इस युगल ने अपने बलिदान द्वारा तत्कालीन समाज के सामने एक मिसाल कायम की तथा पशु-पर्व के अवसर पर उन दोनों का मिलन न होकर मृत्यु हो गई। अपने बलिदान द्वारा उन्होंने रूढ़ियों को नष्ट कर भावी पीढ़ी को आज़ादी दिलवाई। (1+1+1+2)

उत्तर-10. (क) पहाड़ के चरणों में फैले ताल को दर्पण का नाम दिया गया है। कवि पंत को ऐसा लगता है मानो ताल के स्थिर जल में पर्वत अपना प्रतिबिंब निहार रहा है। अपना रूप देखने के लिए पर्वत के पास पुष्प रूपी आँखें हैं। पहाड़ों पर वर्षा के मौसम में हर क्षण दृश्य में परिवर्तन हो रहा है। वर्षा थमने पर झील का जल शांत है और वह दर्पण के समान लग रहा है। कवि ने यहाँ उपमा अलंकार का प्रयोग किया है। (½+½+½+½)

(ख) कवि ने अपनी साखियों में आडंबर पूर्ण भक्ति तथा सामाजिक रूढ़ियों का विरोध किया है। हज़ारों पुस्तकें पढ़ने से कोई ज्ञानी नहीं बनता। जब तक साधक को ईश्वर का सच्चा ज्ञान नहीं होता तब तक वह पंडित नहीं बन सकता। परमात्मा रूपी प्रिय के प्रेम का एक अक्षर भी यदि साधक ने जान लिया तो वह पंडित बन सकता है। इस प्रकार कबीर परमात्मा में केंद्रित भक्ति का समर्थन करते हैं। ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करने वाला ही उनकी दृष्टि में सच्चा पंडित है।

(½+½+½+½)

(ग) सामान्यत: प्रार्थना करते समय मनुष्य ईश्वर से अपने कष्ट दूर करने के लिए कहता है। 'आत्मत्राण' शीर्षक कविता में कविवर रवींद्रनाथ ठाकुर अपने जीवन की हर स्थिति, दुख, विपत्ति का सामना स्वयं करना चाहते हैं। वे अपने प्रभु से केवल सामना करने वाला साहस और शक्ति माँगते हैं तथा अपने को भय से दूर रखने के लिए कहते हैं। (½+½)

उत्तर-11. सर्वप्रथम हमें इस बात को स्वीकार करना पड़ेगा कि मीरा तथा महादेवी वर्मा दोनों अपने प्रियतम से मिलकर एकाकार होना चाहते हैं। दोनों ही अपने परमात्मा की भक्ति में लीन हैं। मीरा भक्तिकालीन सगुण धारा की कवयित्री हैं तो महादेवी आधुनिक युग में छायावाद युग की। मीरा अपने आराध्य से मिलने के लिए उनकी चाकरी करना चाहती है, दासी बनना चाहती है तथा उनसे अपने कष्ट हरने की विनती करती है। मीरा के मन में ईश्वर के दर्शनों की चाह है। दूसरी ओर महादेवी अपनी आस्था, भक्ति का दीपक जलाकर प्रियतम का पथ आलोकित करना चाहती हैं उनके प्रभु का कोई रूप-आकार नहीं है। वे परमात्मा हैं जिनसे महादेवी अपनी आत्मा को मिलाना चाहती है। मीरा ने सहज बोलचाल की भाषा में अपने मन के भाव प्रस्तुत किए

हैं और माधुर्य भाव की भक्ति की है। महादेवी ने तत्सम शब्दावली, अलंकार संयुक्त नवीन बिंबों का प्रयोग अपने गीतों में किया है। अनेक समानताओं के कारण महादेवी का आधुनिक मीरा कहना सीमित अर्थ में उपयुक्त है। (2+1+2)

उत्तर-12. टोपी शुक्ला कहानी में लेखक की सारी सहानुभूति टोपी के साथ है। उसके बचपन में कुछ घटनाएँ ऐसी रहीं कि वह सालाना परीक्षा में फेल होता गया। सबसे पहले उसके बड़े भाई को उसकी पढ़ाई की कोई चिंता नहीं थी। टोपी के पढ़ने बैठते ही वे उससे कोई-न-कोई काम करवाने लगते। उसकी माँ भी उससे काम करवाती थीं। एक बार उसे टाइफायड हो गया। अंत में टोपी के पिता चुनाव में खड़े हुए तब घर में पढ़ाई का माहौल बिल्कुल नहीं बना। फिर भी टोपी ने निश्चित किया और उसने थर्ड डिवीज़न में ही सही, पास होकर दिखाया। (2)

इफ़्फ़न की दादी टोपी से बहुत प्यार करती थी। दोनों की बोली के साथ-साथ दिल भी मिलते थे। वह उनकी हर बात ध्यान से सुनता और मन में उतार लेता था। टोपी के मन के अकेलेपन को उसके मित्र की दादी ने दूर किया। वह हमेशा उनके आस-पास रहना चाहता था। माँ और दादी से मिली पिटाई के बावजूद वह इफ़्फ़न की दादी से मिलता रहा। शायद इसलिए उसने अपने मित्र से दादी बदलने की बात भी की। (2)

संयुक्त परिवार में प्रत्येक बालक के विकास में परिस्थितियों का विशेष हाथ होता है। टोपी के साथ भी था। हम अपने आस-पास भी देखते हैं कि कई बार लिंग भेद, जाति भेद, वर्ग भेद के कारण पालन-पोषण एवं परवरिश का अंतर होता है। फिर भी शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जो इस भेद तथा उलझनों को दूर कर सकता है। (1)

खंड (घ)

उत्तर-13. विषय वस्तु का उचित समायोजन, प्रवाहमयी त्रुटिरहित भाषा, उचित शब्द चयन। (2+2+1)

उत्तर-14. शुद्ध रूपरेखा एवं सही विषय प्रवर्तन सहित पत्र लेखन। (2+1+2)

उत्तर-15. उचित रूपरेखा तथा शुद्ध वर्तनी में सूचना लेखन। (5)

उत्तर-16. उचित विराम चिह्न, परस्पर संबंधित संवाद, अर्थपूर्ण वार्तालाप एवं शुद्ध वर्तनी में लिखित संवाद। (1+1+1+2)

उत्तर-17. शीर्षक, उपशीर्षक, चित्र एवं शुद्ध वर्तनी वाले पाठ सहित आकर्षक विज्ञापन। (1+1+3)